आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2271 • उदयपुर, शनिवार 13 मार्च, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

रेडियो तरंग प्रसारित करेंगी ड्रोन का डेटा

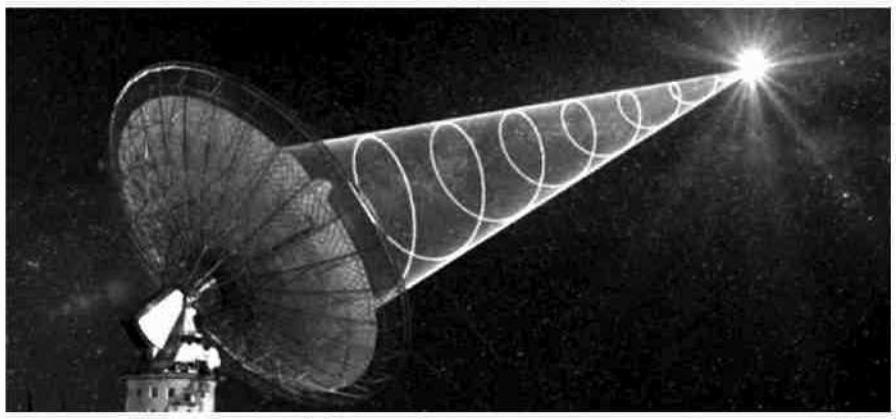

जल्द ही जापान एक ऐसी प्रणाली विकसित कर सकता है जिससे पुलिस अधिकारी आकाश में उड़े रहे संदिग्ध ड्रोन के मालिक, उड़ान की अनुमति और अन्य जानकारी से संबंधित डेटा तुरंत हासिल कर सकेंगे। ड्रोन के बढ़ते इस्तेमाल के चलते ऐसी प्रणाली का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि ड्रोन प्रशिक्षित लोगों द्वारा और जरूरी प्रक्रिया से गुजरने और अनुमति लेने के बाद ही उड़ाए जा रहे हैं या नहीं, ताकि संदिग्ध ड्रोन को तुरंत चिह्नित किया जा सके। माना जा रहा है कि यह प्रणाली वर्ष 2022 की शुरूआत तक जारी की जा सकती है।

जून में सिविल एयरोनॉटिक्स कानून की समीक्षा की गई थी, जिसके बाद ड्रोन स्वामियों के लिए नाम, पता, डिवाइस का सीरियल नंबर और अन्य जानकारी का भू, परिवहन और मंत्रालय पंजीकरण अनिवार्य कर दिया जाएगा। संशोधित कानून जून 2022 तक लागू कर दिया जाएगा। हालांकि कार की लाइसेंस प्लेट की तरह ही ड्रोन पर रजिस्ट्रेशन कोड को दर्शाना जरूरी होगा, इसे जमीन से देखना लगभग असंभव है। इसलिए मंत्रालय की योजना है कि हर ड्रोन पर एक ऐसी डिवाइस लगाई जाए जो इस रजिस्ट्रेशन कोड और अन्य डेटा को रेडियो तरंगों के माध्यम से प्रसारित करेगी। नई प्रणाली के तहत, किसी संदिग्ध ड्रोन को चिह्नित करने पर पुलिस अधिकारी, कोस्ट गार्ड अफसर, प्रमुख केन्द्रों पर तैनात सुपरवाइजर रेडियो तरंगों से प्रसारित कर जानकारी को अपनी मोबाइल डिवाइस पर प्राप्त कर सकेंगे। प्राप्त जानकारी के आधार पर संबंधित अधिकारी सरकारी एजेंसियों से अनुमति संबंधित अन्य जांच कर सकेंगे। रेडियो तरंगों से ड्रोन की पोजिशन भी हासिल होगी, जिससे स्वीकृत लाइट रूट की भी पुष्टि की जा सकेगी।

फेफड़ों के संक्रमण का इलाज होगा आसान

भारतीय विज्ञान संस्थान (आइआइएससी) बेंगलुरु के विज्ञानियों ने नॉर्वे के ओस्लो यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल और एडगर यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं के साथ मिलकर एक ऐसा सॉफ्टवेयर विकसित किया है, जो कोरोना वायरस (कोविड–19) के संक्रमण की गंभीरता का पता लगा सकता है। दावा है कि इसकी मदद से संक्रमण का इलाज करना आसान हो जाएगा।

हाल ही में जर्नल आइईईई ट्रांजेक्शन ऑन नेचुरल नेटवर्क एंड लर्निंग सिस्टम में प्रकाशित एक अध्ययन में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआइ) आधारित इस सॉटवेयर के बारे में विस्तार से बताया गया है। आइआइएससी ने एक बयान में कहा कि कोविड–19 श्वसन तंत्र विशेष रूप से फेफड़ों के ऊतकों को गंभीर नुकसान पहुंचता है। एक्स–रे और सीटी स्कैन जैसी इमेजिंग तकनीक के जरिये यह पता लगाया जा सकता है कि संक्रमण कितना फैल गया है।

आइआइएससी के डिपार्टमेंट ऑफ कंप्यूटेशनल एंड डाटा साइंस एंड इंस्ट्रूमेंटेशन एंड अप्लाइड फिजिक्स के शोधकर्ताओं द्वारा विकसित एनमनेट नामक यह सॉटवेयर कोरोना मरीजों की छाती के सीटी स्कैन का विश्लेषण करता है। एक विशेष प्रकार के तंत्रिका नेटवर्क का उपयोग करते हुए यह अनुमान लगाता है कि फेफड़ों को कितना नुकसान हुआ है। इसके आधार पर डॉक्टर मरीजों को त्वरित इलाज दे सकते हैं।

आइआइएससी के अनुसार, यह ऑटोमेटिक उपकरण कोरोना मरीजों का इलाज कर रहे डॉक्टरों के लिए मददगार सिद्ध हो सकता है और मरीजों को संक्रमण से उबरने में मदद मिल सकेगी। इस अध्ययन के मुख्य शोधकर्ता नवीन पालुरु ने कहा, एनमनेट मूल रूप से छाती के सीटी स्कैन से विश्लेषण करता है और डीप लर्निंग तकनीक के जरिये संक्रमण की गंभीरता का अनुमान लगाता है।

सेवा–जगत्
सेवा पथ पर आपका नारायण सेवा संस्थान

मुंह को मिला निवाला

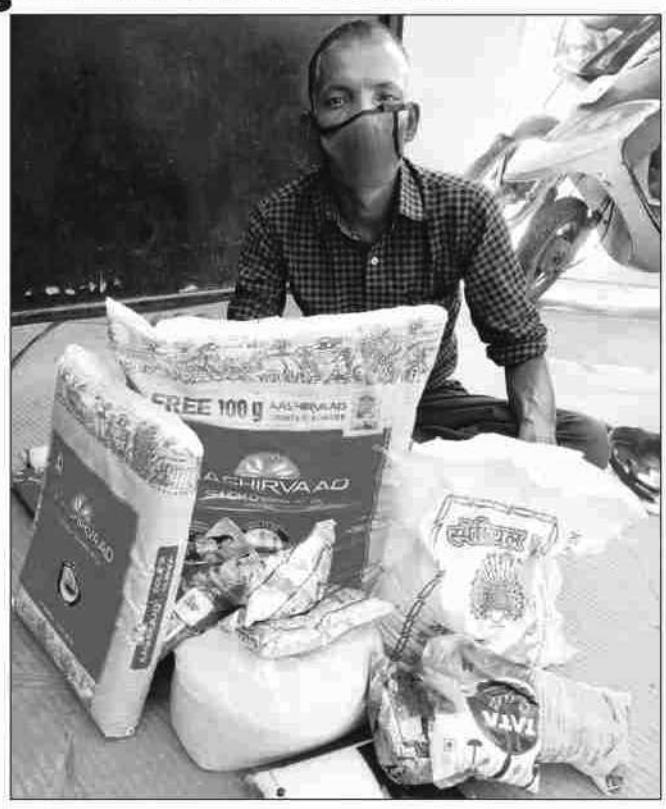

उदयपुर के पायड़ा क्षेत्र में कालका माता रोड़ पर किराए की एक छोटी सी दुकान में लोगों के कपड़ों पर प्रेस कर बरसों से घर परिवार का गुजारा कर रहे श्री धनराज धोबी अपनी 45 साल की जिंदगी में दुःखों से रूबरू भी हुए पर वे कहते हैं कि कोरोना की महामारी ने सबको भयभीत तो किया ही, लेकिन लॉकडाउन से उत्पन्न हालातों की तो किसी ने कल्पना भी नहीं की थी।

काम बंद हो गया, मुंह का निवाला छूट गया। हालात को सम्भालते के लिए वे नारायण सेवा संस्थान का आभार मानते हैं, जो पिछले 6–7 माह से नियमित रूप से उनके घर मासिक राशन भेज रहा है। धनराज दम्पती अपने चार बच्चों के साथ खुश है और यह सब सम्भव हुआ करुण हृदय दानदाताओं को वजह से, जिनके दान से संस्थान आज अनेक नगरों– महानगरों में हजारों गरीबों तक नियमित राशन पहुंचा पा रहा है।

नारायण सेवा संस्थान द्वारा पाली में निःशुल्क कृत्रिम अंग नाप शिविर

संस्थान की पाली शाखा द्वारा निःशुल्क कृत्रिम अंग नाप शिविर का आयोजन हुआ। शिविर सहयोगकर्ता महावीर इन्टरनेशनल विंग महिला, पाली रहे। मुख्य अंतिथि श्रीमान श्रवण जी कोठारी अध्यक्ष महावीर इंटरनेशनल –पाली, श्रीमति विमला जी संरक्षक, विशिष्ट अतिथि श्रीमती ललीता जी कोठारी, श्रीमान् तेजपाल जी जैन, श्रीमती प्रियंका जी मुथा, श्रीमान् मोतीलाल जी बोहरा समाजसेवी, श्रीमान कांतीलाल जी मुथा शाखा संयोजक उपस्थित थे। शिविर में दिव्यांग भाई–बहनों जिन्होंने विभिन्न दुर्घटनाओं में अपने हाथ या पैर गंवा दिए थे और जो जन्मजात पोलियोग्रस्त थे ऐसे 65 रोगियों के पंजीयन हुये। 07 ऑपरेशन हेतु चयन 10 कैलिपर्स, 11 कृत्रिम अंग बनाने के लिए नाप लिए गये। अतिथिगणों ने जरुरतमंद दिव्यांगजनों को आशीर्वाद प्रदान किया, शिविर टीम में श्री भंवरसिंह जी, श्री हरिप्रसाद जी, श्रीमुकेश त्रिपाठी, श्री अनिल जी पालीवाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के निःशुल्क सेवा प्रकल्पों की जानकारी दी।

मन की शुद्धि

एक युवक संसार से विरक्त हो, फिलस्तीन के संत मरटिनियस के पास आया और बोला– "भगवन्! मैं आपकी सेवा में आ गया हूँ। कृपया मुझे आश्रय दें।" संत बोले– "जाओ, पहले शुद्ध होकर आओ।" युवक स्नान करने गया। संत ने एक सफाईवाली को बुलाकर, युवक के आने पर इस प्रकार झाड़ू लगाने को कहा, जिससे धूल युवक के शरीर पर उड़े। सफाईवाली ने वैसा ही किया। इस पर युवक उसे मारने दौड़ा, तो वह भाग गई। संत ने युवक को फिर से शुद्ध होकर आने को कहा। युवक के जाने पर संत ने सफाईवाली को युवक को छूने के लिए कहा। युवक स्नान करके आया, तो सफाईवाली ने झाड़ते–झाड़ते उसे छू लिया। युवक को गुस्सा आया। मगर उसने मारा तो नहीं, पर उसको खूब गालियाँ दीं। संत ने फिर शुद्ध होकर आने को कहा। इस बार संत ने उसे युवक पर कूड़ा डालने के लिए कहा। युवक जब नहाकर आया, तो उसने उस पर कूड़े की पूरी टोकरी उलट दी। किन्तु इस बार युवक बिल्कुल शांत रहा, बल्कि वह सफाई वाली को प्रणाम करके बोला–देवी! तुम मेरी गुरु हो। यह तुम्हारी कृपा थी कि मुझे अपने अहंकार और क्रोध का भान हो गया और मैं उन्हें अपने वश में कर सका।" तब मरटिनियस युवक से बोले – तुम्हारा मन शुद्ध हो गया है। अब तुम मेरे साथ रह सकते हो।

संस्थान का सहकार

बदन सेरेब्रल पाल्सी की गिरफ्त में, मुड़े हुए पैरों को पीछे खींचते हुए। और वो आगे चलने की कोशिश करता है। यहां तक कि वो अपनी बात भी ठीक से नहीं कह पाता था। जन्म देते ही मां चल बसी। मजबूरियों भरी शक्ल का नाम था, कमलेश। बिन माँ के कमलेश ने इतने साल ऐसे ही बिताये। लोगों की उपेक्षा और ताने जब अन्दर तक तोड़ देते तो माँ याद आती। दर्द आँसू बनकर बहता तो कभी प्रार्थना बनकर।

जब पूरी दुनिया ने उसे कहा ना तो नाना के बाजुओं ने उसे सम्भाल लिया। बेजुबान प्रार्थना की आवाजें ईश्वर तक पहुँची तो साथ मिला नारायण सेवा संस्थान का। जो सहारा है ऐसे ही तमाम दीन– दुखियों का।

संस्थान ने कमलेश की जिदंगी को पूरी तरह बदल दिया। बोझ बन चुकी जिन्दगी ने करवट ली। और उम्मीदें आवाज देने लगी। कम्प्युटर का कोर्स किया नारायण सेवा संस्थान में। अब कुछ काम कर लेता है। संस्थान की कोशिश रंग लाई। और कमलेश पूरी तरह आत्मनिर्भर हो गया।

परिवार में खुशियां लौट आयी। अब वो कमाता और वो अपने सपने में और रंग भरने की कोशिश करता। हमेशा इस आभार के साथ कि नारायण सेवा संस्थान ने उसे जीना सिखाया। तकलीफों से दूर, हंसती , मुसकराती दुनिया में।

संस्थान द्वारा किए गए सेवा कार्य

क्र.सं	सेवा कार्य	वर्तमान आकड़े
1	दिव्यांग ऑपरेशन संख्या	4,22,250
2	व्हील चेयर वितरण संख्या	2,72,353
3	ट्राई साईकिल वितरण संख्या	2,62,872
4	बैशाखी वितरण संख्या	2,93,539
5	श्रवण यंत्र वितरण संख्या	5,5004
6	सिलाई मशीन वितरण संख्या	5,220
7	कृत्रिम अंग वितरण संख्या	15,262
8	कैलीपर लाभान्वित संख्या	3,55,597
9	नशामुक्ति संकल्प	3,7749
10	नारायण रोटी पैकेट	9,82,400
11	अन्न वितरण (किलो में)	1,63,728,72
12	भोजन थाली वितरण रोगीयों कि संख्या	3,91,18,000
13	वस्त्र वितरण संख्या	2,70,773,20
14	स्कूल युनिफार्म वितरण संख्या	1,50,500
15	स्वेटर वितरण संख्या	1,35,500
16	कम्बल वितरण संख्या	1,72,000
17	दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह लाभान्वित जोड़ो की संख्या	2109 जोड़े
18	हेंडपंप संख्या	49
19	आवासीय विद्यालय	455
20	नारायण चिल्ड्रन एकेडमी	821
21	भगवान निराश्रिमत बालगृह	3160
22	**व्यवसायिक प्रशिक्षण शिविर–** 1 सिलाई प्रशिक्षण लाभान्वित 2 मोबाइल प्रशिक्षण लाभान्वित 3 कम्प्युटर प्रशिक्षण लाभान्वित	 952 871 805

सत्संग और स्वाध्याय

यद्यपि मनुष्य परमात्मा का ही अंश है, तथापि जीवन की श्रेष्ठता–शुभता और सामर्थ्य सत्संग स्वाध्याय से ही उजागर होती है। अतः आत्मबोध के लिए प्रत्यनशील रहें।

ज्ञान दो प्रकार का होता है। एक स्वतः स्फूर्त ज्ञान, जो आंतरिक रूप से उद्भूत होता है। दूसरा ज्ञान बाह्य रूप से प्राप्त होता है। इस बाह्य रूप से प्राप्त ज्ञान का मुख्य साधन है– स्वाध्याय और सत्संग। जो जितना स्वाध्याय करता है, उसे उतने ही अधिक ज्ञान की प्राप्ति होती है। सत्संग के ज्ञान से परिमार्जन होता है। स्वाध्याय और सत्संग से ज्ञान की वृद्धि होती है। ज्ञान का लाभ आत्म विकास में होता है।

इससे व्यक्ति, परिस्थति और परिवेश को परखने की क्षमता का विकास होता है। अच्छे और बुरे की पहचान की क्षमता बढ़ती है। इससे धर्म और अर्धम का बोध होता है। अच्छे और बुरे की पहचान की क्षमता बढ़ती है। इससे धर्म और अधर्म का बोध होता है, तन और मन का अंतर पता चलता है, अपने और पराए का भेद समाप्त होता है।

स्वाध्याय और सत्संग से सूक्ष्म के अंदर झाकने का और विशाल की ओर बढ़ने का अवसर मिलता है। ऐसी स्थिति आती है कि पूरी धरती अपना परिवार लगने लगती है। इसलिए शुद्ध, पवित्र और सुखी जीवन जीने के लिए सत्संग और स्वाध्याय दोनो आधार स्तंभ है।

सत्संग से ही मनुष्य के अंदर स्वाध्याय की भावना जागती है। सवाल यह है कि सत्संग क्या है ? इस संसार में तीन पदार्थ है–ईश्वर, जीव और प्र. ति–सत। इन तीनों के बारे में जहां अच्छी तरह से बताया जाए, उसे सत्संग कहते है। श्रेष्ठ और सात्विक जनों का संग करना, उत्तम पुस्तकों का अध्ययन करना, नित्य पवित्र और धार्मिक वातावरण का संग करना, यह सब सत्संग के अंतर्गत आता है। सत्संग हमारे जीवन के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना की शरीर के लिए भोजन। भोजनादि से हम शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ती कर लेते हैं, किंतु आत्मा जो इस शरीर की मालिक है, उसकी संतुष्टि के लिए कुछ नहीं करते। आत्मा का भोजन सत्संग, स्वाध्याय और संध्योपासना है।

भविष्य को आकार देते भारतवंशी

टाइम मैगजीन ने दुनिया के टॉप इमर्जिंग लीडर्स की लिस्ट जारी कर दी है। इसमें ट्विटर की मुख्य वकील विजया गाड्डे और यूके के वित्त मंत्री ऋषि सनक सहित पांच भारतीय मूल के व्यक्तियों को जगह मिली है। यह सूची 100 सबसे प्रभावशाली लोगों की टाईम 100 की शृंखला का विस्तार है। इसमें उन नेताओं को शामिल किया गया है जो भविष्य को आकार दे रहे है।

• **ऋषि सुनक**– वित्त मंत्री (भारतवंशी) गत वर्ष ब्रिटेन के वित्तमत्री बने। कोरोना महामारी के दौरान नौकरी गंवा चुके नागरिकों की मदद करने पर चर्चित हुए। अगला प्रधानमंत्री बनने के लिए वे सबसे अधिक पसंद किये जा रहे हैं।

• **विजया गाड्डे**– ट्विटर पालिसी हैड (भारतवंशी) 46 वर्षीय गाड्डे कैपिटल (संसद) पर हमले के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का ट्विटर अकाउंट निलंबित करने में अहम भूमिक। गाड्डे के प्रभाव से ट्विटर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता व मानवाधिकार समान परिप्रेक्ष्य में देख रहा है।

• **अपूर्वा मेहता**– संस्थापक इंस्टाकार्ट (भारतवंशी) 34 वर्षीय अपूर्वा मेहता के प्रयासों से कोरोनाकाल में इंस्टाकार्ट को बेतहाशा ऑर्डर मिले। धनी लोग भी जुटे। अपूर्वा का कहना है कि भविष्य में स्मार्टफोन सुपर मार्केट होगा।

"चलने लगे लडखड़ाते कदम, जागा विश्वास जिन्दगी के लिये"

शब्बीर हुसैन के परिवार में छह सदस्य है। पिता जी कॉस्मेटीक की दुकान चलाते हैं। जन्म के डेढ़ वर्ष बाद अचानक तेज बुखार से शब्बीर बेहोश हो गया। और होश आने पर उसने पाया कि उसके पांव पूरी तरह बेजान हो चुके थे। पूरा शरीर निष्क्रिय हो चुका था। श्री गुलाम मोहम्मद पिता ने शब्बीर को श्री नगर के एक अस्पताल में दिखाया तो डॉक्टर ने बताया कि शब्बीर को परेलाइसिस हो चुका है इसका कोई इलाज नहीं है। गुलाम मोहम्मद ने शब्बीर को अन्य कई अस्पतालों में दिखाया लेकिन कहीं से भी आशाजनक उत्तर न मिलने पर गुलाम मोहम्मद टूट से गये।

एक दिन टी.वी. पर नारायण सेवा संस्थान का कार्यक्रम देखकर गुलाम मोहम्मद के दिल में शब्बीर के पांवों पर चलने की उम्मीद जागने लगी।

कुछ दिन कार्यक्रम देखने के पश्चात् उन्होंने संस्थान में फोन किया और संस्थान से सकारात्मक उत्तर पाकर गुलाम मोहम्मद अपने पुत्र शब्बीर को लेकर नारायण सेवा संस्थान में आये । और शब्बीर के पांवों के दो सफल ऑपरेशन हुए शब्बीर के पांवों में नई जान आने लगी । ऑपरेशन से पूर्व शब्बीर की टांगे टेढ़ी थी। वह चलने – फिरने में बिल्कुल ही असमर्थ था। ऑपरेशन के बाद शब्बीर सामान्य रूप से अपने पांवों पर खड़ा होकर चलने लगा है।

शब्बीर जैसे ओर भी कई दिव्यांग – बंधु जिनका जीवन घर की चार दिवारी तक ही सिमट कर रहा गया है, उन्हें अपने पांवों पर खड़ा कर जीवन की मुख्यधारा में शामिल करने का सफल प्रयास नारायण सेवा संस्थान कर रहा है। संस्थान के ये सफल प्रयास आपके द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से ही संम्भव हो पा रहे है।

सम्पादकीय

'समय बड़ा बलवान है।' वह कहावत तो हम सबने सुन ही रखी है। वास्तव में समय–समय की बात ही है जो हमें सफल, असफल, आशान्वित, निराश करती हैं। किसी भी कार्य का उपयुक्त समय हो तो कम परिश्रम में भी सफलता की सुनिश्चितता रहती है। यदि समय सही न हो तो कितना भी परिश्रम क्यों न करलें निराशा ही निराशा हाथ लगेगी। इसका आशय यह भी नहीं लेना चाहिये कि सफलता का श्रेय केवल समय को ही जाता है। जीवन में सफलताएं भी आती हैं तो असफलताएं भी। प्रश्न सफलता या असफलता का नहीं होकर प्रश्न पूरे मन से कार्य के प्रति निष्ठा का है। यदि हम अपनी पूरी शक्ति से, ईमानदारी से किसी कार्य में लगते हैं और वांछित सफलता नहीं मिलती तो इसमें हमारा दोष नहीं है। शायद समय का समायोजन उचित नहीं हो पा रहा है। पर ध्यान रखें कि यदि हम मनोयोग व पूर्णता के साथ लगें तो प्रथमतः भले ही निराशा आये, अस लता

कुछ काव्यमय

समय–समय की बात है,
समय–समय का फेर।
समय ठीक तो सभी सफल
वरना लगती देर।
पर केवल हम समय पर
कैसे हों अवलम्ब।
करते रहें प्रयास हम
चाहे फलित विलम्ब।

- वख्तीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

धर्म का सच्चा स्वरूप

एक साधु अपने शिष्यों के साथ मेले का भ्रमण कर रहे थे। एक स्थान पर एक बाबा माला फेर रहे थे, लेकिन बार–बार आंख खोलकर देख लेते कि लोगों ने कितने पैसे दान दिये हैं। साधु हंसे और आगे बढ़े। आगे एक पण्डित जी भागवत कर रहे थे, पर उनका चेहरा यथावत था। शब्द भी भावों से कोई संगत नहीं खा रहे थे। चेलों की जमात बैठी थी, उन्हें भी देखकर साधु हंस पड़े। इससे आगे बढ़ने पर साधु को एक चिकित्सक रोगी की परिचर्या करता हुआ मिला। वह घावों को धोकर मरहम पट्टी करता जाता। अपनी मधुर वाणी से उसे बराबर सांत्वना दे रहा था। यह देखकर साधु की आंखों में आंसू आ गये।

आश्रम पर लौटते ही शिष्यों ने पहले दो स्थानों पर हंसने व फिर रोने का कारण पूछा तो वे बोले –बेटा ! पहले दो स्थानों पर तो मात्र आडम्बर था, पर भगवान के नाम के लिए व्याकुल एक ही व्यक्ति दिखा –वह चिकित्सक। उसकी सेवाभावना देखकर अन्दर से हृदय द्रवित हो उठा। न जाने कब जन–मानस धर्म के सच्चे स्वरूप को समझेगा।

अपनों से अपनी बात

कृपानिधान की कृपा है....

उदयपुर से 130 कि.मी. दूर पानरवा के एक केम्प की बात भूलाये नहीं भूलती। अति वृद्ध एवं बहुत गरीब सी दिखने वाली एक माई को जब जर्सी देने लगे तो उसने अपनी छोटी सी गांठ को कम कर दबा लिया। हमने कहा "माँजी यह गांठ नीचे रख दीजिये, ताकि आराम से आप कपड़ा ले सके।" माँजी ने गांठ और कस कर दबाई। हमारे आश्चर्य का समाधान करते हुऐ एक सज्जन ने बताया, इसकी कुल जमा पूँजी इसी गांव में बंद है। यहां से तीस कि.मी. दूर नदी के किनारे रहती है, झोपड़ा भी नहीं है। हाय–हाय यह माँजी मात्र एक कपड़ा लेने के लिये 30 कि.मी. दूर पैदल चल कर आयी है।

शुरू–शुरू में ये वनवासी बंधु सभी को शंका की दृष्टि से देखते हैं इनको लगता है कि लोग आते हैं, भाषण आदि करके चले जाते हैं। जब इनको यह विश्वास होता है कि ये वास्वत में हमारे शुभ चिंतक है तो बात को ध्यान से सुनते हैं, और मानते हैं।

संस्थान का 81वां शिविर 25–6–89 को इसवाल में आयोजित हुआ। वहाँ एकत्रित हुए आस पास के क्षेत्रों से 2000 से अधिक बंधु–बांधव माताएँ बहिने व बच्चे। चिकित्सा के लिए गये डॉ. एन.एम. दुग्गड़ एवं डॉ. महेश दशोरा ने 206 बीमारों की चिकित्सा जांच कर लगभग 2100 रु. की दवाइयाँ प्रदान की। मेडिकल प्रकल्प हेतु चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी का सौजन्य रहा। वनवासियों ने जीवन भर के लिए शराब व मांस का परित्याग किया। हर बार की तरह इन बन्धुओं को शिक्षा, स्वच्छता आदि के विभिन्न पहलुओं की तरफ कई उदाहरणों से बताया। इनके रीति रिवाज, इनकी उन्मुक्त हंसी, सन्तोष की गहरी भावना हम शहरवासियों को भी बहुत कुछ सिखा देती है।

रामचरित मानस में एक अर्धाली आती है "गिरा अनयन नयन बिनु बानी" जीभ के आंखें नहीं कि वह देख सके, और हमारे ये चक्षु, इनके जीभ नहीं कि ये कह सके। कई मीठे अनुभव, हृदय को अन्दर से छू जाने वाली कई बातें ऐसी हो जाती है कि बार–बार कृपानिधान की कृपा का आभास होता है।

– कैलाश 'मानव'

जाको राखे साईयाँ

ईश्वर जिसे बचाना चाहता है, उसे कोई मार नहीं सकता और ठीक उसी तरह ईश्वर जिसे मारना चाहता है, उसे कोई बचा नहीं सकता। मृत्यु शैय्या तक पहुँचे प्राणी भी अक्सर ईश्वर– कृपा से पुनः जिंदगी की ओर लौट आते हैं।

जंगल में एक दिन मौसम बहुत खराब था। आसमान में बिजलियाँ चमक रहीं थीं, तेज आँधी चल रही थी। सभी जानवर अपनी जान बचाने हेतु इधर–उधर भाग रहे थे। उसी जंगल में एक मादा हिरण थी, जिसका प्रसव–काल अत्यन्त निकट था। वह भी अपनी संतान को किसी सुरक्षित जगह पर जन्म देना चाहती थी। अचानक उसे कुछ झाड़ियाँ नजर आईं। वह दुबक कर उन झाड़ियों के अन्दर बैठ गई।

वह बच्चे को जन्म देने ही वाली थी कि उसकी नजर कुछ ही दूरी पर बैठे शेर पर पड़ी। वह भी उसकी ओर घात लगाकर बैठा था। हिरणी एकदम से सहम गई, उसने धीरे से गर्दन दूसरी तरफ घुमाई तो उसने देखा कि एक शिकारी भी उसकी तरफ तीर साधे कुछ ही दूरी पर बैठा हुआ था। उस हिरणी के लिए दोनों तरफ मौत, एक तरफ कुँआ तो दूसरी तरफ खाई के समान थी।

वह पूर्णतः बेसहारा थी। उसने अपनी आँखें बंद कीं, परमात्मा को याद किया और दोनों तरफ की चिन्ताएँ छोड़कर पूरा ध्यान अपने प्रसव की ओर देना शुरू कर दिया। अचानक आसमान में जोरदार बिजली कड़की, जो सीधी शिकारी के हाथ पर गिरी और उसका हाथ जल गया तथा हड़बड़ाहट में उसके हाथ से तीर छूट गया, जो सीधा जाकर शेर को लगा।

तीर के तेज प्रहार से शेर के प्राण–पखेरू उड़ गए। हिरणी ने अपनी सारी चिन्ताएँ छोड़कर मात्र परमात्मा और अपने कर्म का ध्यान किया तो उसकी जान बच गई तथा उसने एक स्वस्थ शिशु को जन्म दिया।

सच ही कहा है कि –

जाँको राखे साईयाँ,
मार सके न कोय।
बाल न बाँका कर सके,
जो जग बैरी होय।।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश गुलाब बाग घूमने रोज जाता था। उन दिनों वहां चलने वाली बच्चों की रेल बन्द थी। इसके स्टेशन के बाहर का क्षेत्र उसे अपना कार्यक्रम शूट करने के लिए उपयुक्त जगह लगा। उसके पास शिक्षाप्रद, धार्मिक तथा प्रेरणा – प्रसंगों की पुस्तकों की कमी नहीं थी। कल्याण के अंक भी उसने संगृहित कर रखे थे। इन सबको पढ़ पढ़ कर कार्यक्रम में क्या बोलना है उसकी रूपरेखा तैयार की।

कैलाश के लिए यह कार्य एकदम अनूठा था। एक निश्चिन्तता यह थी कि मंच पर कार्यक्रम देते हुए सामने दर्शकों की भीड़ देखकर जो डर की अनुभूति होती है वैसा कोई डर इसमें नहीं था। यहां तो केमरा ही श्रोता था, दर्शक जो होने वाले थे वे टी. वी. के बंधक दर्शक होते हैं, उन्हें तो जो दिखाया जा रहा है वह देखना ही है, ज्यादा से ज्यादा वे चैनल बदल सकते हैं। इस एहसास के बाद कैलाश का आत्म विश्वास द्विगुणित हो गया।

केमरा टीम भी जुट गई थी। दूरदर्शन से जुड़े एक माथुर मिल गये थे। उन्हीं को यह दायित्व सौंप दिया। नीति कथाएं और प्रेरक प्रसंग इत्यादि कैलाश ने बचपन में बहुत पढ़े थे। सामग्री की कोई कमी नहीं थी बस केमरे के सामने उसे ढंग से दोहराना था। उसने अपने कार्यक्रम को नाम दिया – वाणी की सेवा। शूटिंग की शुरूआत गुलाब बाग के लव–कुश रेल स्टेडियम के बाहर से ही की। दरी बिछाकर, पुस्तकें लेकर कैलाश बैठ गया। जिन्दगी भर उसने नीति वाक्यों के नाम पट्ट लगाये थे। उन्हें टी. वी. हेतु दोहराने में कोई दिक्कत नहीं हुई।

अंश-204

कोलेस्ट्रॉल घटाती है अर्जुन की छाल

प्रकृति से आयुर्वेद में हृदय के लिए अर्जुन की छाल समान बताया है। इसकी छाल से बने चूर्ण को हृदय रोग, कोलेस्ट्रॉल, हाई ब्लड़ प्रेशर, अत्यधिक रक्तस्राव सहित कई रोगों में काफी उपयोगी माना गया है।

अर्जुन की छाल अंदर से लाल रंग का होती है। पंसारी की दुकान पर आसानी से मिलती है। हृदय ही धकड़न नियमित व व्यवस्थित रखने के लिए अर्जुन की छाल का क्षीर का व चाय बनाकर देते हैं। बीमारी के अनुसार इसकी मात्रा तय होती है। मात्रा ज्याादा होने पर दस्त शुरू हो सकते है। व्यक्ति की पाचन शक्ति के अनुसार इसकी मात्रा तय होती है। चिकित्सक की सलाह के बिना न लें।

कॉलेस्ट्रॉल में कमी –

इसके नियमित प्रयोग से हाई ब्लड प्रेशर, दिल के दौरे, नसों में जम फैट को हटाता है। इससे कॉलेस्ट्रॉल में कमी (अतिरोस्किलरेटिक चेंजेज) आती है। अर्जुन की चाय के नियमित प्रयोग से क्षीर पाक की तरह फायदा मिलता है।

अनुभव अमृतम्

ये अनजान आदमी राम–राम कर रहा है, ओम नमोः शिवाय कर रहा है। मेरे से बातें कर रहा है। परिवार में कितने हैं? कब आये? क्या तकलीफ हो गयी? क्या हुआ ऐसा? वो टुकर–टुकर देखता, बोलता साहब आपको पहचाना नहीं। स्वाभाविक है कोई पहचान नहीं हुई थी। ना भौगोलिक, ना नजदीकी दुनिया जिसको जातिगत कहती।

जात–पात पूछे नहीं कोइ।।
हरि को भजे सो हरि को होइ।

मूल धर्म तो यही है, लेकिन जातियाँ बन गई। उलझ गये, तो जातिगत भी मेल नहीं। एक मेल है इंसानियत का। मैं इनको कहता बा साहब मैं यहीं रहता हूँ। सिरोही में उस समय में पोस्ट ऑफिस में था 1976 में। बाद में 1979 में दूरसंचार विभाग में आया। मैंने कहा मैं पोस्ट ऑफिस में यहाँ अकाउन्ट्स अधिकारी हूँ। बस मेरा घर भी पास में है। आपके लिए कुछ संतरे लाये हैं, ये बिस्कुट ले लीजिए, अब उस आदमी को विश्वास हुआ। उसने बोला राम–राम सा बैठो–बैठो साहब। तो इस तरह की रोगी के साथ बातचीत में सोहनलाल जी ने देख लिया था। बहुत उनका उपकार है मेरे जीवन में। मेडिकल स्टोर पर ले जाकर के खाता खुलवा दिया। कैलाश जी कोई भी दवाई लिखे मेरे नाम लिखकर दे देना– ये पाँच हजार रुपये एडवान्स रख लो– आप। फिर जैसे ही पूर्ति पूरी हो जायेगी मैं और दे जाऊंगा– आपको। वाह! ठाकुर उन्हीं सोहनलाल जी भाईसाहब ने एक दिन कहा कि आपका राजमल जी भाईसाहब से परिचय है या नहीं है?

सेवा ईश्वरीय उपहार– 84 (कैलाश 'मानव')

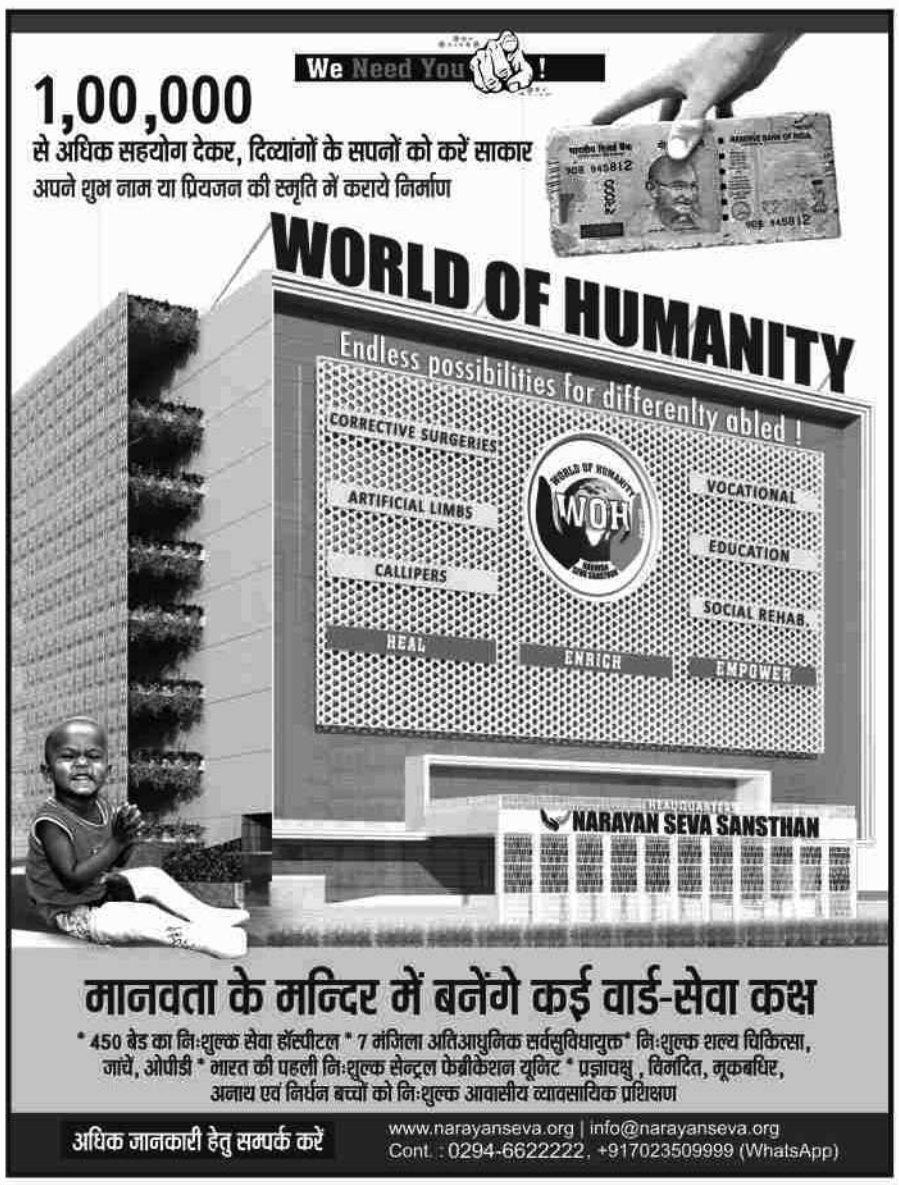

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023